18-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - इस पुरानी दुनिया में जिस प्रकार की आशायें मनुष्य रखते हैं वह आशायें तुम्हें नहीं रखनी है, क्योंकि यह दुनिया विनाश होनी है"

ये सदैव याद रहे...

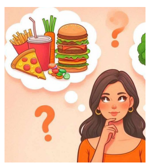

आंखें जो देखती है वह सब है मिटने वाले
चलना है निज वतन जहां के प्रभु है रहने वाले
अपनी नजर टिकाइए उस परमधाम पर
पल भर निकालिए प्रभु के भी नाम पर

प्रश्नः-संगमयुग पर कौन सी आश रखो तो सब आशायें सदा के लिए पूरी हो जायेंगी?

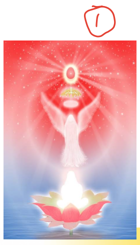
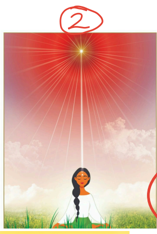
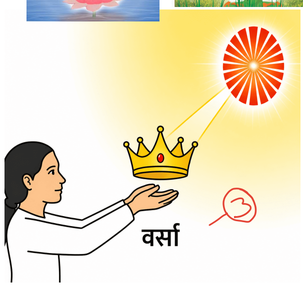

उत्तरः-हमें पावन बन, बाप को याद कर उनसे पूरा वर्सा लेना है - That's All सिर्फ यही आश हो। इसी आश से सदा के लिए सब आशायें पूरी हो जायेंगी। आयुश्वान भव, पुत्रवान भव, धनवान भव..... सब वरदान मिल जायेंगे। सतयुग में सब कामनायें पूरी हो जायेंगी।

गीत:- तुम्हीं हो माता, तुम्हीं पिता हो... Click

तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो
तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो

तुम्हीं हो साथी तुम्हीं सहारे
कोई न अपना सिवा तुम्हारे
आ—आ— आ—आ— आ
तुम्हीं हो साथी तुम्हीं सहारे
कोई न अपना सिवा तुम्हारे
तुम्हीं हो नैया, तुम्हीं खेवैया
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो
तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो

जो खिल सके न वो फूल हम हैं
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं
आ—आ— आ—आ— आ
जो खिल सके न वो फूल हम हैं
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं
दया की दृष्टि सदा ही रखना
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो
तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

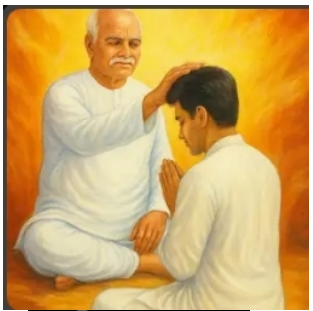

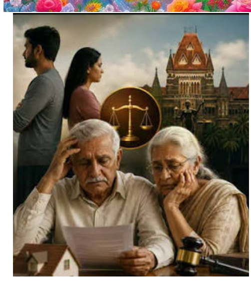

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों अर्थात् आत्माओं प्रति परमपिता परमात्मा यह समझा रहे हैं। तुम जानते हो चढ़ाओ नशा... बेहद का बाप हमको वरदान दे रहे हैं। वो लोग आशीर्वाद देते हैं - पुत्रवान भव, आयुश्वान भव, धनवान भव। अब बाप तुमको वरदान देते हैं - आयुश्वान भव। तुम्हारी आयु बहुत बड़ी होगी। वहाँ पुत्र भी होगा तो वह भी सुख देने वाला होगा। यहाँ जो भी बच्चे हैं, दु:ख देने वाले हैं। सतयुग में जो बच्चे होंगे, सुख देने वाले होंगे। अभी तुम बच्चे जानते हो बेहद का बाप बेहद सुख का वर्सा दे रहे हैं। बरोबर हम आयुश्वान, धनवान भी बनेंगे। अभी कोई भी कामना दिल में नहीं रखनी है। तुम्हारी सब कामनायें सतयुग में पूरी होनी है।

Mind very well... इस नर्क में कोई भी कामना नहीं रखनी है। धन की भी कामना नहीं रखो। बहुत धन हो, बड़ी नौकरी मिले - यह भी जास्ती तमन्ना नहीं रखना है।

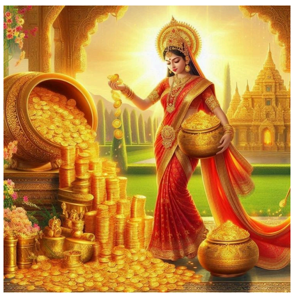

पेट तो एक पाव रोटी खाता है, जास्ती लोभ में नहीं रहना है। जास्ती धन होगा तो वह खत्म हो जाना है। बच्चे जानते हैं बाबा हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। अब बाप कहते हैं - दे दान तो

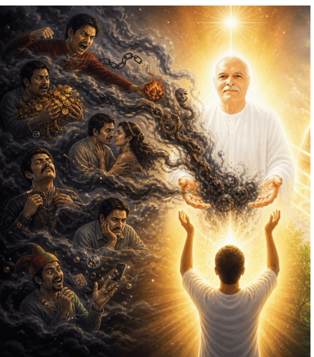

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

18-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Action

छूटे ग्रहण। कौन सा दान दो? यह 5 विकार हैं। यह दान में देने हैं तो ग्रहचारी छूट जाए और तुम 16 कला सम्पूर्ण बन जाओ।

Reaction/Result

तुम जानते हो हमको सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण... यहाँ बनना है। 5 विकारों का दान देना पड़ता है। बच्चों को बाप कहते हैं - मीठे बच्चों आश कोई भी नहीं रखो, सिवाए बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेने। बाकी थोड़ा समय है, गाया भी जाता है - बहुत गई थोड़ी रही। बाकी थोड़ा समय इस विनाश में है इसलिए इस पुरानी दुनिया की कोई आश नहीं रखो। सिर्फ बाप को याद करते रहो। याद से बच्चों को सतोप्रधान बनना है। इस दुनिया में मनुष्य जो आश रखते हैं वह कोई भी नहीं रखो। आश सिर्फ रखनी है एक शिवबाबा से हम अपना स्वर्ग का वर्सा लेवें। किसको भी कभी दु:ख नहीं देना है। एक दो के ऊपर काम कटारी चलाना - यह सबसे बड़ा दु:ख है इसलिए संन्यासी लोग स्त्री से अलग हो जाते हैं। कहते हैं इसने छोड़ दिया है। इस समय रावण राज्य में सब पतित, पाप आत्मायें हैं।

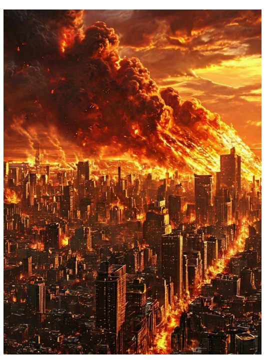

Wake up, 90 years lapsed.. Take it Seriously..

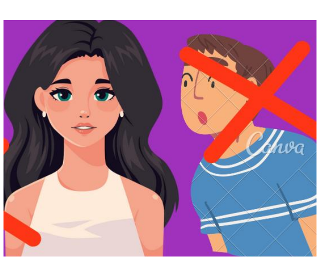

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

May I have your Attention Please..!

Don't Take it easy

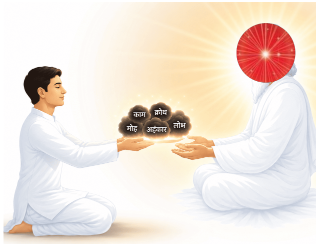

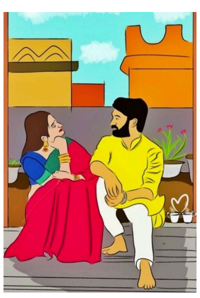

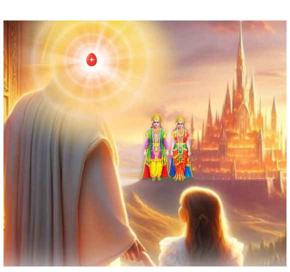

अभी समय बहुत कम है, तुम अगर बाप की श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो श्रेष्ठ नहीं बनेंगे। बच्चों को ऊंच ते ऊंच बनना है इसलिए 5 विकारों का दान देना है तो यह ग्रहण छूट जायेगा। सबके ऊपर ग्रहचारी है, बिल्कुल ही काले बन गये हैं। बाप कहते हैं - अगर मेरे से वर्सा लेना है तो पावन बनो। द्वापर से लेकर तुम पतित बनते-बनते सतोप्रधान से तमोप्रधान बन पड़े हो, तब तो गाते हो पतित-पावन आओ, आकर हमें पावन बनाओ। तो बाप फरमान करते हैं - बच्चे अब पतित नहीं बनो, काम महाशत्रु को जीतो, इससे ही तुमने आदि-मध्य-अन्त दु:ख को पाया है। बाप कहते हैं - तुम स्वर्ग में बिल्कुल पवित्र थे। अब रावण की मत पर तुम पतित बने हो, तब तो देवताओं के आगे जाकर उन्हों की महिमा गाते हो कि आप सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी और हम विकारी हैं। निर्विकारी होने से सुख ही सुख है। बाप कहते हैं - अब हम आये हैं, तुम बच्चों को निर्विकारी बनाने। अब तुम बच्चों को सब इच्छायें छोड़नी है। अपना धन्धा धोरी आदि भल करो। और एक दो को ज्ञान अमृत

Here is the Fault

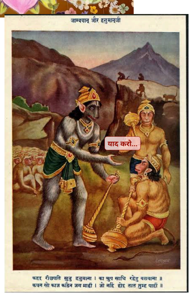

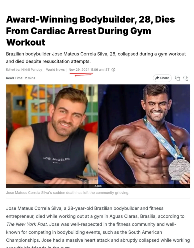
Award-Winning Bodybuilder, 28, Dies From Cardiac Arrest During Gym Workout

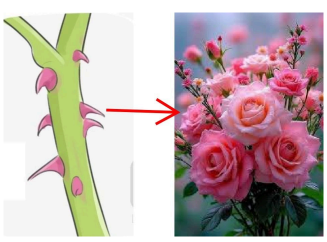

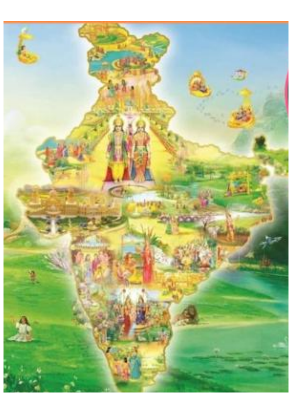

पिलाओ। गाया भी जाता है - अमृत छोड़ विष काहे को खाए। बाप कहते हैं कोई भी कामना नहीं रखो। हम याद की यात्रा से पूरे सतोप्रधान बन जायेंगे। 63 जन्म जो पाप किये हैं, One & Only way वह याद से ही खलास होंगे। अब निर्विकारी बनना है। भल माया के तूफान आयें परन्तु पतित नहीं बनना है। मनुष्य से देवता बनना है। तुम ही सतोप्रधान पूज्य देवता थे फिर तुम ही पूज्य से पुजारी बनते हो। हम निरोगी थे फिर रोगी बनते हैं अब फिर से निरोगी बन रहे हैं। जब निरोगी थे तो आयु बड़ी थी। अब तो देखो बैठे-बैठे मनुष्य मर जाते हैं। तो कोई भी आश नहीं रखनी है। यह सब छी-छी आशायें हैं। कांटे से फूल बनने के लिए तो एक ही फर्स्टक्लास आश है - बाप कहते हैं मुझे याद करो तो पुण्य आत्मा बन जायेंगे। इस समय सबके ऊपर राहू का ग्रहण है। सारे भारत पर राहू का ग्रहण है। फिर चाहिए - बृहस्पति की दशा। तुम जानते हो अब हमारे ऊपर बृहस्पति की दशा बैठी है। भारत स्वर्ग था ना। सतयुग में तुम्हारे ऊपर बृहस्पति की दशा थी। इस समय है राहू की दशा। अब फिर बेहद के

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

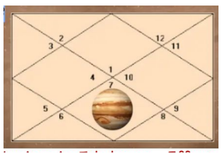

18-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बाप से बृहस्पति की दशा मिलती है। बृहस्पति की दशा में 21 जन्मों का सुख रहता है। त्रेता में हैं शुक्र की दशा। जितना जो याद करेंगे, बहुत याद करेंगे तो बृहस्पति की दशा होगी। यह भी समझा दिया है अब सबको वापिस घर जाना है इसलिए बाप को याद करते रहो तो विकर्म विनाश हो और तुम उड़ने लायक बनो। माया ने तुम्हारे पंख काट दिये हैं।

यह परम ज्ञान अब तक
ना पढ़ा ना लिखा गया है किताबों में
भगवान पढ़ायेंगे सम्मुख
सोचा ना देखा ख्वाबों में
प्रभु मिलन का यह प्यारा अनुभव
शब्दों में कहा नहीं जाता है
भगवान तुम्हारा ज्ञान सिमर कर

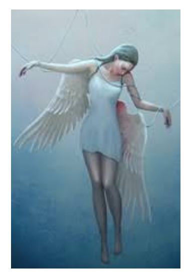

चढ़ाओ नशा...

अब तुमको मिलती है ईश्वरीय मत, जिससे तुम सदा सुखी बनते हो। ईश्वरीय मत पर तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो। विश्व की बादशाही ले रहे हो। ईश्वरीय मत मिलती है कि बाप को याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। याद से ही विकर्म विनाश हो जायेंगे, पवित्र बन जायेंगे। पवित्र आत्मा ही स्वर्ग के लायक बनेगी। वहाँ तुम्हारा शरीर भी निरोगी होगा, आयु भी बड़ी होगी। धन भी बहुत होगा। वहाँ कभी धर्म का बच्चा नहीं बनाते। बाप कहते हैं - आयुश्वान भव, सम्पत्तिवान भव। पुत्र भी एक जरूर होगा। इस समय बाप सभी को धर्म का

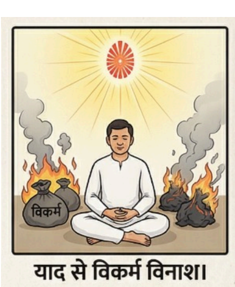

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

18-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बच्चा बनाते हैं। तो फिर सतयुग में कोई धर्म का बच्चा होता नहीं। एक बच्चा एक बच्ची है योगबल से। पूछते हैं वहाँ बच्चे कैसे पैदा होंगे, वहाँ है ही योगबल। ड्रामा में नूँध है। सतयुग में सब योगी हैं। श्रीकृष्ण को योगेश्वर कहा जाता है। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण योग में रहते हैं। वो तो पूरा पवित्र योगी है। ईश्वर ने सबको योगेश्वर बनाया है तो भविष्य में योगी रहते हैं। बाप ने योगी बनाया है। योगियों की आयु बड़ी रहती है। भोगी की आयु छोटी होती है। ईश्वर ने बच्चों को पवित्र बनाए योग सिखाकर देवता बनाया है, इनको कहा जाता है योगी। योगी अथवा ऋषि पवित्र होते हैं। तुमको समझाया है - तुम हो राजऋषि। राजयोग सीख रहे हो, राजाई पद पाने के लिए। इस समय बाप को याद करना है, यहाँ कोई उल्टी आश नहीं रखनी है कि बच्चा पैदा हो। फिर भी विकार में जाना पड़े ना, काम कटारी चलानी पड़े। देह-अभिमानी काम कटारी चलाते हैं। देही-अभिमानी काम कटारी नहीं चलाते हैं। बाप समझाते हैं पवित्र बनो। आत्माओं से बात करते हैं, अब यह काम कटारी नहीं चलाओ।

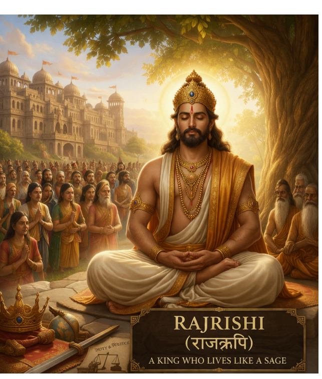

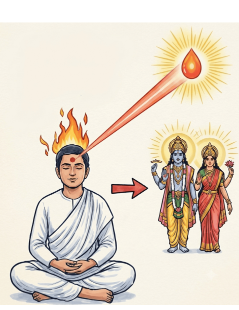

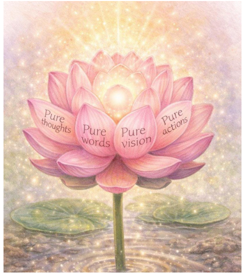

18-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पवित्र बनो तो तुम्हारे सब दु:ख दूर हो जायेंगे। तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। बाप कितना सुख देते हैं। बाप से तो पूरा वर्सा लेना चाहिए।

Click

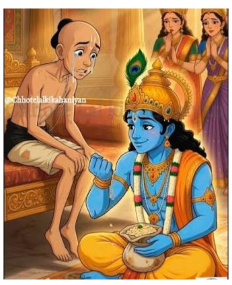

बाप तो गरीब निवाज़ है। गाया भी जाता है सुदामा ने दो चपटी चावल दी तो महल मिल गये। बाबा 21 जन्मों के लिए वर्सा दे देते हैं। यह भी समझते हो - अब सबको वापिस जाना है। शिवबाबा की स्थापना के कार्य में जितना जो मदद करे। घर में युनिवर्सिटी वा हॉस्पिटल खोलो। बोर्ड पर लिख दो, बहनों और भाईयों, 21 जन्म लिए, एवरहेल्दी और वेल्दी बनना है तो आकर समझो। हम एक सेकेण्ड में एवरहेल्दी, वेल्दी बनने का रास्ता बताते हैं। तुम सर्जन हो ना। सर्जन बोर्ड तो जरूर लगाते हैं, नहीं तो मनुष्यों को कैसे पता पड़े। तुम भी अपने घर के बाहर में बोर्ड लगा दो। कोई भी आये उसको दो बाप का राज़ समझाओ। हद के बाप से हद का वर्सा लेते आये हो। बेहद का बाप कहते हैं -

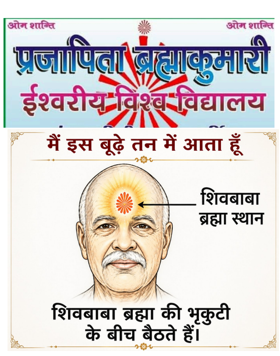

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

18-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

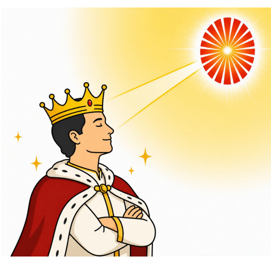

मामेकम् याद करो तो बेहद का वर्सा मिलेगा। प्रोजेक्टर, प्रदर्शनी में पहले यह समझाओ। इस पुरुषार्थ से तुम यह बनेंगे। अब है संगम। कलियुग से सतयुग बनना है। तुम भारतवासी सतोप्रधान थे, अब तमोप्रधान बने हो। अब बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। अक्षर ही दो हैं। अल्फ को याद करो तो बे बादशाही तुम्हारी। इस याद से खुशी में रहेंगे, इस छी-छी दुनिया में कोई भी प्रकार की आश नहीं रखो। यहाँ तुम पुरुषार्थ करते हो - जीते जी मरने के लिए। वह तो मरने के बाद कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। तुम सबको कहते हो हम स्वर्गवासी बनने के लिए बाप को याद करते हैं। उससे बेहद का सुख मिलता है।

बाप को याद करने से तुम कब रोयेंगे, पीटेंगे नहीं।

m.m.m....imp.

Instead, challange the Maya

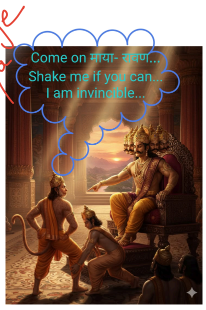

तूफान माया के आते हैं, उसका ख्याल नहीं करो। माया के तूफान तो आयेंगे। यह है युद्ध। संकल्प-विकल्प आते हैं, तो मुफ्त में टाइम जाता है।

तूफान तो पास हो जायेगा, सदैव थोड़ेही रहेगा। सवेरे उठकर बाप को याद करना है, बाप से वर्सा लेना है। यह धुन अन्दर लगी रहे। बाप और कोई

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

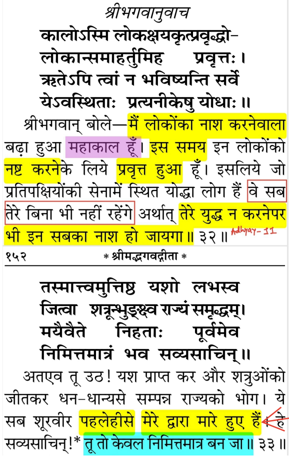
श्रीभगवानुवाच
कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो-
लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः॥

श्रीभगवान् बोले—मैं लोकोंका नाश करनेवाला बढ़ा हुआ महाकाल हूँ। इस समय इन लोकोंको नष्ट करनेके लिये प्रवृत्त हुआ हूँ। इसलिये जो प्रतिपक्षियोंकी सेनामें स्थित योद्धा लोग हैं वे सब तेरे बिना भी नहीं रहेंगे अर्थात् तेरे युद्ध न करनेपर भी इन सबका नाश हो जायगा॥ ३२॥ Adhyay-11

१५२ * श्रीमद्भगवद्गीता *

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व
जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्॥

अतएव तू उठ! यश प्राप्त कर और शत्रुओंको जीतकर धन-धान्यसे सम्पन्न राज्यको भोग। ये सब शूरवीर पहलेहीसे मेरे द्वारा मारे हुए हैं। हे सव्यसाचिन्!* तू तो केवल निमित्तमात्र बन जा॥ ३३॥

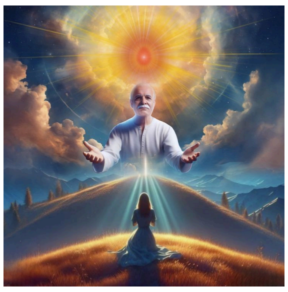

18-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा"

तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ बाप को याद करना है। और सबको भूल जाओ, यह सब मरे हुए हैं। आपस में यही बातें करते रहो। बाबा अब तो सिर्फ आपको ही याद करेंगे। आप से स्वर्ग का वर्सा लेंगे। टाइम रख दो - हम 3-4 बजे जरूर उठकर बाप को याद करेंगे। चक्र भी याद रखना है। बाप ने हमें रचता और रचना की नॉलेज दी है। हम इस मनुष्य सृष्टि झाड़ को जानते हैं। हम 21 जन्म कैसे लेते हैं - यह बुद्धि में है। अभी फिर हम जाते हैं, स्वर्ग में फिर से आकर पार्ट बजायेंगे। हम आत्मा हैं, आत्मा को ही राज्य मिलता है। बाप को याद करने से वर्से के हकदार बन जाते हैं। यह राजयोग है। बाप को याद करते हैं। बेहद के बाप द्वारा अनेक बार विश्व के मालिक बने हैं, फिर नर्कवासी बने हैं। अब फिर स्वर्गवासी बनते हैं - एक बाबा की याद से। बाप की याद से ही पाप भस्म हो जायेंगे इसलिए इसको योग अग्नि कहा जाता है।

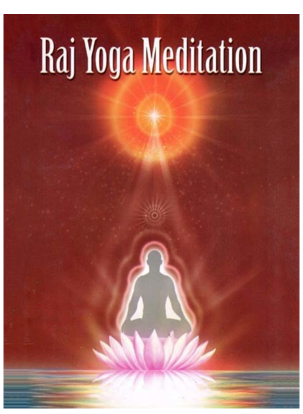

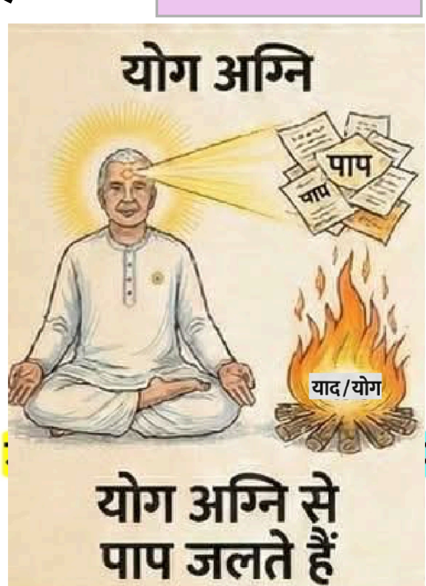

Points: गा सेवा M.imp.

18-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

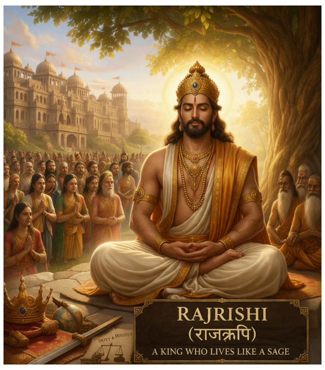

तुम ब्राह्मण हो राजऋषि, ऋषि हमेशा पवित्र होते हैं, बाप को याद करते और राजाई का वर्सा लेते हैं। अब थोड़ेही विकार के लिए आश रखनी है। यह छी-छी आश है। अब तो पारलौकिक बाप से वर्सा लेना है। बीमार होते भी याद कर सकते हो।

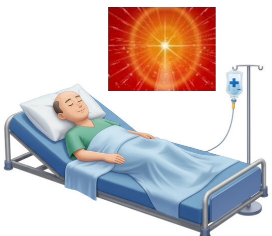

बाप को भी बच्चे प्यारे होते हैं। बाबा को कितने बच्चों को पत्र आदि लिखने पड़ते हैं। शिवबाबा लिखवाते हैं। तुम भी पत्र लिखते हो - शिवबाबा केयरआफ ब्रह्मा। हम सब शिवबाबा के बच्चे ब्रदर्स हैं। रूहानी बाप आकर हमको पावन बनाते हैं, इसलिए कहा जाता है - पतित-पावन। सभी आत्माओं को पावन बनाते हैं। कोई को भी छोड़ता नहीं हूँ, प्रकृति भी पावन बनती है। तुम जानते हो सतयुग में प्रकृति भी पावन रहेगी। अभी शरीर भी पतित है तब तो गंगा में शरीर धोने जाते हैं, लेकिन आत्मा तो पावन होती नहीं। वह तो होगी - योग अग्नि से। अच्छा!

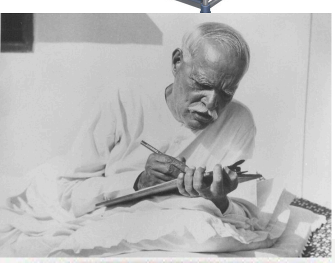

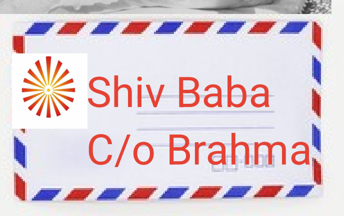

समझा?

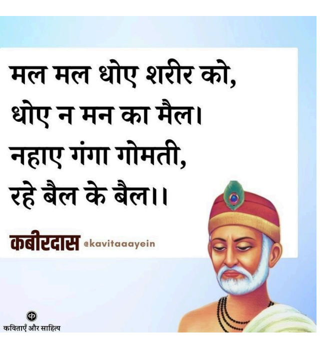

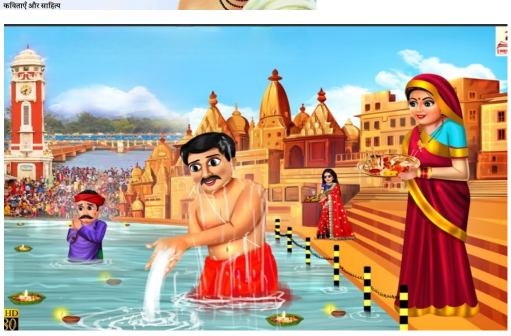

18-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

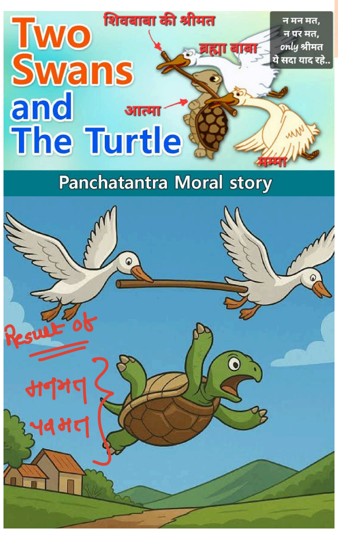

1) इस कलियुगी दुनिया में कोई भी उल्टी आश नहीं रखनी है। सम्पूर्ण सतोप्रधान बनने के लिए ईश्वरीय मत पर चलना है।

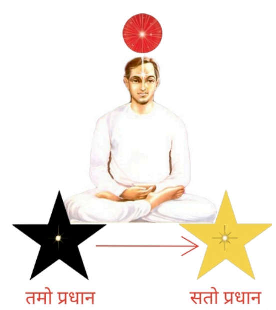

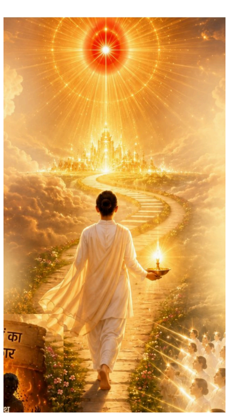

2) "पावन बनकर वापिस घर जाना है", यही एक आश रखनी है। अन्त मती सो गति। माया के तूफानों में समय नहीं गँवाना है।

18-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- सदा पावरफुल वृत्ति द्वारा बेहद की सेवा में तत्पर रहने वाले हद की बातों से मुक्त भव

जैसे साकार बाप को सेवा के सिवाए कुछ भी दिखाई नहीं देता था, ऐसे आप बच्चे भी अपने पावरफुल वृत्ति द्वारा बेहद की सेवा पर सदा तत्पर रहो तो हद की बातें स्वत: खत्म हो जायेंगी।

Attention Please..!

हद की बातों में समय देना - यह भी गुडियों का खेल है जिसमें समय और एनर्जी वेस्ट जाती है इसलिए छोटी-छोटी बातों में समय वा जमा की हुई शक्तियां व्यर्थ नहीं गंवाओ।

Mind very well...

अगर

स्लोगन:- सेवा में सफलता प्राप्त करनी है तो बोल और चाल-चलन प्रभावशाली हो।

Points: ज्ञान य... ...गा सेवा M.imp.

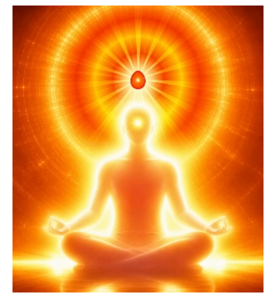

ये अव्यक्त इशारे -

ज्वालास्वरूप स्थिति में रह

शक्तिशाली याद का अनुभव करो

समय प्रमाण अब सर्व ब्राह्मण आत्माओं को समीप लाते हुए ज्वाला स्वरूप का वायुमण्डल बनाने की सेवा करो, Call of time/समय की पुकार

उसके लिए चाहे भट्ठियां करो या आपस में संगठित होकर रूहरिहान करो लेकिन ज्वाला स्वरूप का अनुभव करो और कराओ,

इस सेवा में लग जाओ तो छोटी-छोटी बातें सहज परिवर्तन हो जायेंगी। समझा?

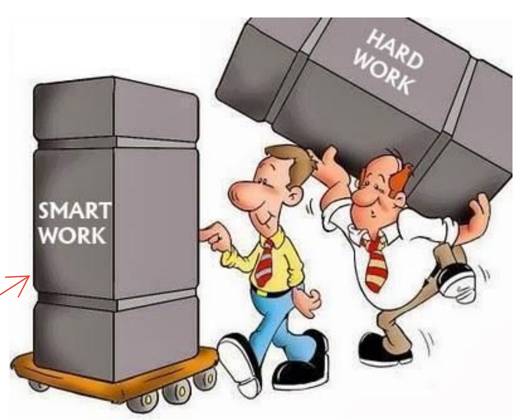

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans जून 26 → Click

All अव्यक्त इशारे जून 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

11.3 सेवा के लिए उमंग-उत्साह रखो :

(अ) आँख खुली, मिलन मनाया और सेवा के क्षेत्र पर उपस्थित हुए। गुडमार्निंग से सेवा शुरू होती है और गुडनाइट तक सेवा ही सेवा है। जैसे निरन्तर योगी, ऐसे ही निरन्तर रूहानी सेवाधारी।

(आ) एक है मनसा का दान, दूसरा है वाचा का और तीसरा है कर्म का दान।

90

AmritVela.p65 2/18/2010, 11:58 AM

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

मनसा द्वारा सर्व शक्तियों का दान, कर्म द्वारा सर्व गुणों का दान, वाणी द्वारा ज्ञान का दान। तो सदैव जो दिन आरम्भ होता है उसमें पहले यह प्लान बनाओ कि आज के दिन यह तीनों दान किस-किस रूप से करने हैं और फिर दिन समाप्त होने के बाद चैक करो कि ''हम महादानी बनें ? तीनों ही प्रकार का दान किया ?'' क्योंकि तीनों प्रकार के दान की अपनी-अपनी प्रालब्ध वा प्राप्ति है।

47

बापदादा ने देखा सभी बच्चे पुरुषार्थी तो हैं लेकिन बीच-बीच में अलबेलापन पुरुषार्थ को तीव्र बनाने के बजाए, बीच-बीच में ढीला कर देता है। फिर बापदादा को बहुत मीठी-मीठी बातें सुनाते हैं। क्या कहते? अपने आपसे पूछो क्या कहते हैं? हो जायेगा, होना ही है, समय पर पहुँच जायेंगे। तो यह अलबेलापन, समय पर जो वायदा किया है कि बाबा हम साथ है और साथ चलेंगे, हाथ में हाथ देके चलेंगे, सिवाए समान के साथ कैसे चलेंगे? एक बात में बापदादा को विशेष खुशी होती है, किस बात की? सभी बच्चे जो भी चलते रहते हैं वा उड़ते रहते हैं, दोनों बाप के प्यार में अच्छी मार्क्स ले रहे हैं, सम्पूर्ण बनने में सम्पन्न बनने में अलग बात है, लेकिन बाप से प्यार है, प्यार की मार्क्स अच्छी हैं। अभी समान बनने में मार्क्स लेनी है। जो बाप के बोल वह बच्चों के बोल, जो बाप के कर्म वही बच्चों के कर्म, समान बनने के लिए सिर्फ एक शब्द सहज प्रैक्टिकल में लाओ, कहना सहज है, वह एक शब्द है 'बापदादा करावनहार है', एक 'करावन' शब्द आत्म-अभिमानी बनने में भी सहज है, मैं आत्मा भी इन कर्मेन्द्रियों की करावनहार हूँ और हर कदम

52

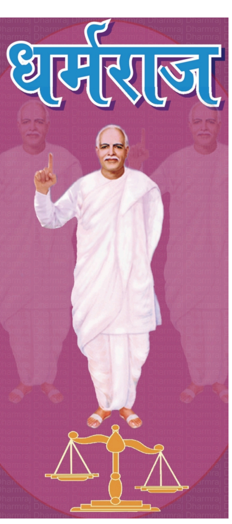

धर्मराज

ये तो पक्का कर लो..

में, हर कार्य में "करावनहार बाप है, मैं निमित्त हूँ," क्योंकि विघ्न पड़ता है दो शब्दों का, एक मैं दूसरा मेरा, करावनहार शब्द से मैं-मेरा समाप्त हो जाता है। मैं निमित्त हूँ, निमित्त बनाने वाला करा रहा है, मैं-पन नहीं। तो सुना, बापदादा क्या चाहता है? एक तो सच्ची दिल, साफ दिल का स्नेह। भोलानाथ बाप सच्ची दिल पर बहुत सहज राज़ी हो जाते हैं। जब भोलानाथ राज़ी तो धर्मराज काज़ी आँख भी नहीं उठा सकते। धर्मराज को भी बाय-बाय करके चले जायेंगे। वह भी आप बापसमान बच्चों को नमस्ते करेगा, झुकेगा। आप ऐसे बाप के प्यारे हो लेकिन सिर्फ चेक करना, कोई स्नेह में लीकेज नहीं हो। अपने देहभान वा दूसरे की कोई भी विशेषता की लीकेज खत्म। अनुभवीमूर्त।

समझा?

बापदादा हमसे क्या चाहते हैं?

Click

समझा?

Note it down

(15.11.2008)